सं. ग्रो० वि./एफ.ही./79-84/26932.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै, एण्डी वूलन एण्ड सिल्क पिल्ज प्रा० लि०, 14/4, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री सुधीर दयाल वरनवाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीचे इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोणिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) तारा प्रदान की गई शिक्तियों का श्रीयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए श्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला नमायनिणय के लिए निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री मुझीर दयाल वरनवाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० जो० वि०/148-84/26945.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राथ है कि मैं० प्रवन्धक, पी०एच० एण्ड एच०पी० ऐरिया, कैन्टीन 6, के०ई० लाईन, ग्रम्बाला कैन्ट के श्रमिक श्री सोहन सिंह तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्त्वना सं. 3(44)-84-3श्रम, दिनांक 19 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिवित्यम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामलाहै :—

क्या श्री सोहन सिंह की सैवामों दा सनगन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? * सं. श्रो.वि./149-84/26951.—शृंकि हरिश्राणा के राज्यपान की राज है कि मैं ० प्रवन्धक पी०एच० एण्ड एच०

पी० ऐरिया, कैन्टीन 6, के०ई० लाईन, प्रम्वाला कैन्ट, के श्रमिक श्री रघुवीर सिहतथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके वार लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिनए, प्रव, प्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 19 ग्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखां मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुनंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या थी रघुबीर सिंह की सेवाओं का समापत स्थायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भ्रोति /एफ. डी. /76-84/26971. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० के० के० इन्टर प्राईजिज, 20/1, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री दर्शन लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदािंगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियाम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दर्शन लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, सो वह किस राहत का हकदार है?

िर्हे श्रीकारकोल एको प्राप्त करें हो। यह क्रिकार के क्रिकार क्षेत्र क्षेत्र के विश्वास क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र